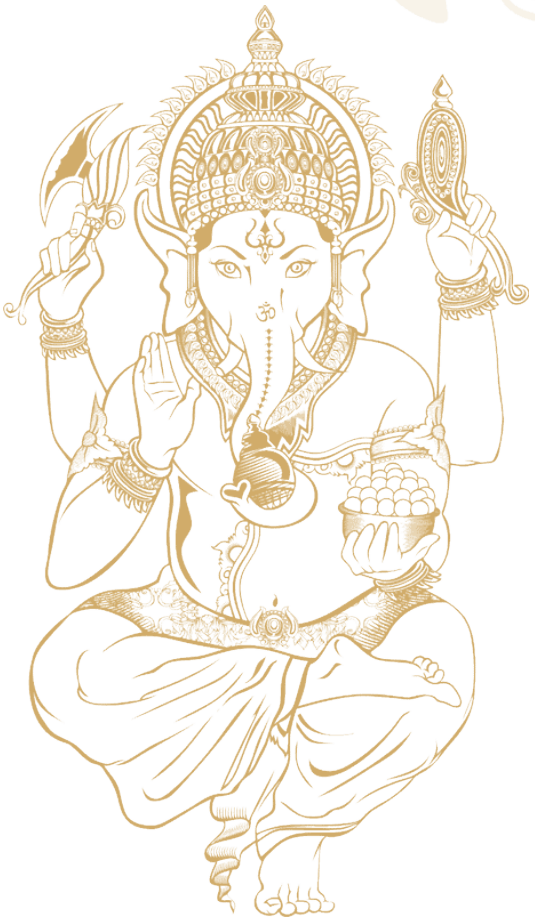

Hitesh

Sakshi

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121955601

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121955601 Date: 17/04/2026

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
12/03/1999	जन्म तिथि	9-10/04/2002
शुक्रवार	दिन	मंगल-बुधवार
घंटे 13:35:00	जन्म समय	05:00:00 घंटे
घटी 17:34:55	जन्म समय(घटी)	57:28:39 घटी
India	देश	India
Hapur	स्थान	Meerut
28:43:00 उत्तर	अक्षांश	29:00:00 उत्तर
77:47:00 पूर्व	रेखांश	77:42:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:18:52	स्थानिक संस्कार	-00:19:12 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:33:01	सूर्योदय	06:00:40
18:24:22	सूर्यास्त	18:41:35
23:50:34	चित्रपक्षीय अयनांश	23:53:02

मिथुन	लग्न	मीन
बुध	लग्न लग्नाधिपति	गुरु
धनु	राशि	कुम्भ
गुरु	राशि-स्वामी	शनि
पूर्वाषाढ़ा	नक्षत्र	पू०भाद्रपद
शुक्र	नक्षत्र स्वामी	गुरु
2	चरण	2
वरियान	योग	ब्रह्म
वणिज	करण	गर
धा-धर्मेन्द्र	जन्म नामाक्षर	सो-सौम्या
मीन	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मेष
क्षत्रिय	वर्ण	शूद्र
मानव	वश्य	मानव
वानर	योनि	सिंह
मनुष्य	गण	मनुष्य
मध्य	नाड़ी	आद्य
सर्प	वर्ग	मेष

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
शुक्र 10वर्ष 7मा 20दि		25:52:56	मिथु	लग्न	मीन	03:34:38	गुरु 9वर्ष 9मा 21दि	
मंगल		27:27:12	कुंभ	सूर्य	मीन	26:02:32	शनि	
01/11/2025		19:34:22	धनु	चंद्र	कुंभ	25:09:33	30/01/2012	
31/10/2032		18:07:36	तुला	मंगल	वृष	03:32:53	30/01/2031	
मंगल	30/03/2026	09:55:59	मीन व	बुध	मीन	28:54:01	शनि	02/02/2015
राहु	17/04/2027	12:25:56	मीन	गुरु	मिथु	14:08:01	बुध	12/10/2017
गुरु	23/03/2028	28:46:51	मीन	शुक्र	मेष	16:49:31	केतु	21/11/2018
शनि	02/05/2029	07:18:54	मेष	शनि	वृष	17:21:50	शुक्र	21/01/2022
बुध	29/04/2030	27:57:49	कर्क	राहु व	वृष	25:57:41	सूर्य	03/01/2023
केतु	25/09/2030	27:57:49	मक	केतु व	वृश्चि	25:57:41	चन्द्र	03/08/2024
शुक्र	25/11/2031	21:02:16	मक	हर्ष	कुंभ	03:48:18	मंगल	12/09/2025
सूर्य	01/04/2032	09:42:24	मक	नेप	मक	16:47:32	राहु	19/07/2028
चन्द्र	31/10/2032	16:39:12	वृश्चि	प्लूटो व	वृश्चि	23:37:55	गुरु	30/01/2031

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:50:34 चित्रपक्षीय अयनांश 23:53:02

लग्न-चलित

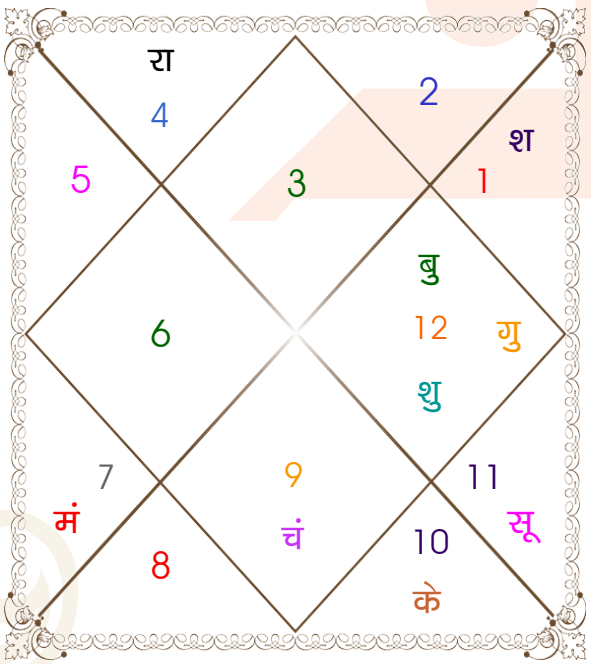

लग्न-चलित

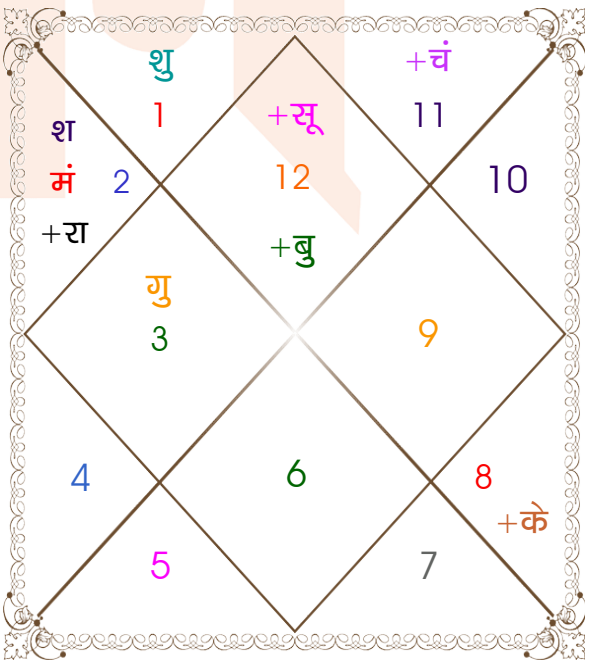

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	शूद्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	मानव	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	प्रत्यारि	साधक	3	1.50	--	भाग्य
योनि	वानर	सिंह	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	गुरु	शनि	5	3.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	मनुष्य	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	धनु	कुम्भ	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	आद्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	29.50		

कुल : **29.5 / 36**

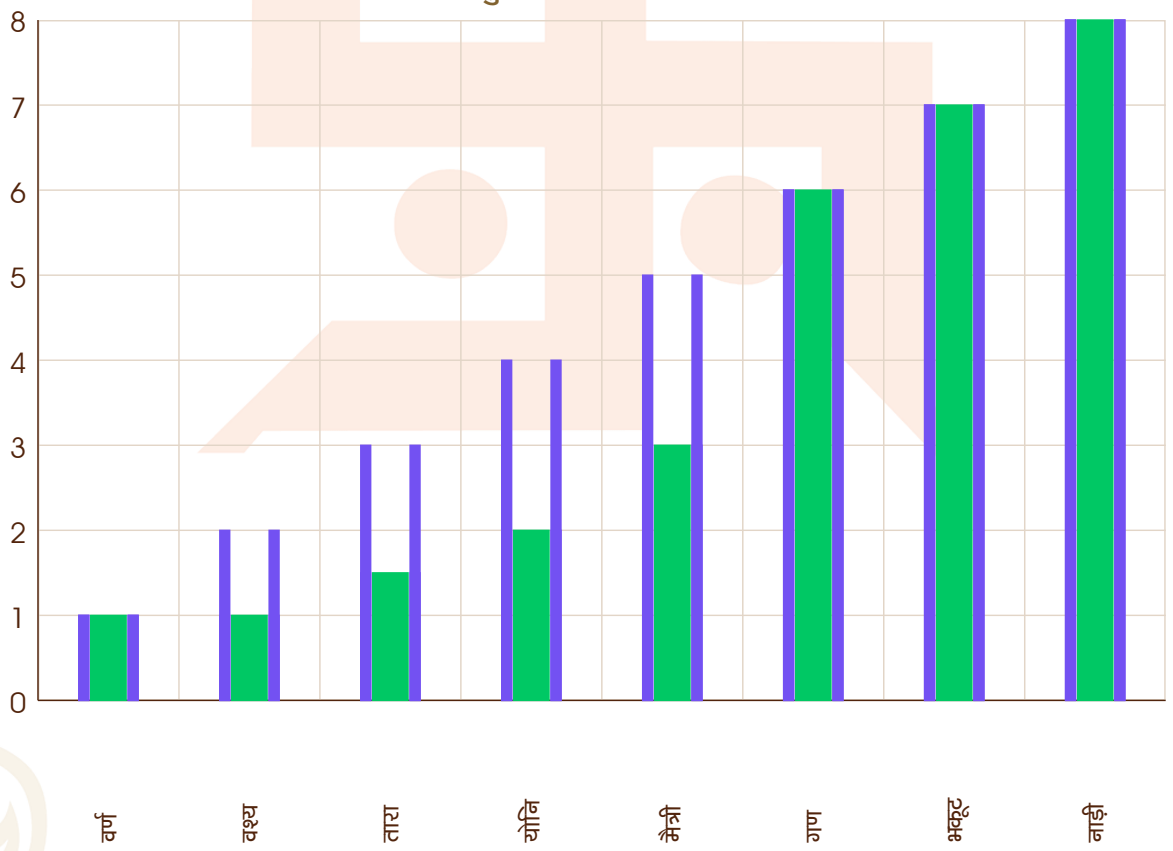

अष्टकूट मिलान

भ्पजमेी का वर्ग सर्प है तथाौीप का वर्ग मेष है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार भ्पजमेी औरौीप का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

भ्पजमेी मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में पंचम् भाव में स्थित है।

ौीप मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है।

भ्पजमेी तथाौीप में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

भ्पजमी का वर्ण क्षत्रिय तथा ॅीप का वर्ण शूद्र है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके प्रभाव से ॅीप वैश्विक मां की भूमिका अदा करने वाली होगी तथा सभी की देखभाल तथा सेवा बिना थके, बिना शिकायत किये करती रहेगी। साथ ही परिवार के किसी भी सदस्य अथवा भ्पजमी से कभी तर्क-वितर्क नहीं करेगी। अपने इसी आतिथ्य भाव के कारण सभी की प्रशंसा का पात्र बनेगी।

वश्य

भ्पजमी का वश्य चतुष्पद अर्थात पशु है एवं ॅीप का वश्य द्विपद अर्थात मनुष्य है अतः यह मिलान औसत मिलान होगा। यद्यपि कि पशु एवं मनुष्य के स्वभाव एक-दूसरे से सर्वथा भिन्न होते हैं अतः दोनों के स्वभाव, गुण, पसंद/नापसंद बिल्कुल अलग हो सकते हैं किंतु फिर भी दोनों एक-दूसरे के सान्निध्य में रहेंगे। फिर भी कभी-कभी मनुष्य निर्दयी एवं आक्रामक हो जाता है। इसी प्रकार भ्पजमी एवं ॅीप एक-दूसरे के साथ रहकर अपने जीवन का आनंद लेते रहेंगे किंतु कभी-कभी ॅीप क्रूर एवं अमर्यादित व्यवहार का प्रदर्शन करती रहेगी।

तारा

भ्पजमी की तारा प्रत्यरि तथा ॅीप की तारा साधक है। भ्पजमी की तारा प्रत्यरि होने के कारण यह मिलान औसत मिलान ही है। विवाह के उपरांत भ्पजमी कालांतर में बुरी आदतों, अधोपतन, चरित्रहीनता एवं नैतिक पतन का शिकार हो सकता है। उसके अवैध संबंध भी हो सकते हैं। परिणामस्वरूप ॅीप को काफी कष्टों का सामना करना पड़ सकता है। भविष्य में तनाव, निराशा, अवसाद एवं पीड़ा के कारण उसका झुकाव अध्यात्म की ओर हो सकता है।

योनि

भ्पजमी की योनि वानर है तथा ॅीप की योनि सिंह है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं हैं और इनके बीच उदासीनता का अर्थात सम संबंध है। अतः यह मिलान औसत मिलान कहलायेगा। जिसके कारण दोनों के बीच आपसी समझबूझ का अभाव रहेगा तथा जीवन में सहयोग की भावना एवं प्रेम का अभाव भी बना रहेगा। दोनों के बीच अक्सर लड़ाई झगड़े होंगे तथा परिवार में तनाव तथा अशांति का भाव भी रह सकता है। साथ ही दोनों के बीच अविश्वास की भावना भी बनी रहेगी। दोनों एक दूसरे को संदेह की भावना से देखेंगे जिससे दोनों के बीच कटुता का भाव भी पैदा होगा। दोनों के बीच आपसी समझ की कमी भी रहेगी अतः दोनों के बीच वैचारिक मतभेद भी हो सकते हैं। संभव है कि दोनों के बीच अवैध संबंध को लेकर संदेह की भावना बन जाये जिसके कारण पारिवारिक तनाव भी हो सकता है। बात-बात में दोनों के बीच में कभी कभी तर्क-वितर्क की जगह कुतर्क भी हो सकता है। वर या कन्या में से कोई भी विश्वासघात भी कर सकता है। जिसके कारण दोनों के बीच लड़ाई झगड़ा भी हो सकता है। इनको अपने जीवन में अत्याधिक संघर्ष के उपरांत ही सफलता प्राप्त होगी अतः कठिन

परिश्रम की आवश्यकता पड़ेगी। इसके बावजूद इनको अपने जीवन में सफलता कम ही मिलेगी। अर्थात मेहनत अधिक और परिणाम कम ही मिलने की संभावना है। जिसके कारण दोनों को समय-समय पर मानसिक पीड़ा होती रहेगी। पारिवारिक आय औसत ही रहेगी। अर्थात धनागम के स्रोत कम ही रहेंगे। पति-पत्नी के बीच विचारों में भिन्नता होगी एवं जीवन में उतार-चढ़ाव बने रहेंगे। दोनों लापरवाह प्रवृत्ति के होंगे किंतु परिवार के प्रति कर्तव्यनिष्ठ रहेंगे। दोनों के बीच रोमांस एवं सेक्स में रुचि की कमी भी रह सकती है। कई बार वाद-विवाद में तर्क-वितर्क होते रहेंगे। जिसके कारण समय-समय पर धन हानि भी हो सकती है। आपस में प्रेम एवं सौहार्द्र की भी कमी रहेगी। इस प्रकार इनका वैवाहिक जीवन बहुत अच्छा न रहकर निम्न सामान्य स्तर का ही होगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में भ्पजमेी एवंीप दोनों के राशि स्वामी परस्पर सम हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से औसत मिलान है। ज्योतिष की दृष्टि से यह मिलान औसत माना जायेगा। इसके कारण जीवन एवं करियर में हमेशा उतार-चढ़ाव बने रहेंगे। दोनों के बीच प्रेम एवं सहयोग का माहौल रहेगा किंतु यदा-कदा आपस में ये लड़ाई-झगड़ा भी कर सकते हैं। हालांकि ये जल्दी ही अपने झगड़े को भुलाकर समझौता भी कर लेंगे तथा जीवन पथ पर आगे बढते रहेंगे। सफलता पाने के लिए इनको अथक परिश्रम एवं उद्यम करना पड़ सकता है।

गण

भ्पजमेी का गण मनुष्य तथाीप का गण भी मनुष्य ही है। अर्थात दोनों का गण समान है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण दोनों के स्वभाव एक जैसे होंगे। दोनों भौतिक सुखों के आकांक्षी, परिश्रमी, बुद्धिमान, व्यावहारिक तथा मिलनसार रहेंगे। तथा साथ मिलकर अपने सभी दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

भकूट

भ्पजमेी सेीप की राशि तृतीय भाव में स्थित है तथाीप से भ्पजमेी की राशि एकादश भाव में स्थित है जिसके कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण भ्पजमेी अति महत्वाकांक्षी, परिश्रमी, बुद्धिमान तथा अच्छा कमाने वाले होंगे। दूसरी ओरीप सद्गुणी, परिश्रमी, सहयोगी एवं दयालु होंगी तथा अपने पति की हर क्षेत्र में हर संभव सहायता करेंगी। दोनों के बीच मधुर तालमेल, एक-दूसरे की अच्छी समझ होगी। ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे दोनों एक-दूसरे के लिए ही बने हों।

नाड़ी

भ्पजमेी की नाड़ी मध्य है तथाीप की नाड़ी आद्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात यह मिलान अति उत्तम मिलान है। आद्य एवं मध्य नाड़ी का समन्वय अति उत्तम होता है क्योंकि यह जीवनी

शक्ति को संतुलित करता है। तीनों जीवनी शक्तियों वात, पित्त एवं कफ का संतुलन जीवन के अस्तित्व के लिए आवश्यक है। अतः आपकी संतान उत्तम स्वास्थ्य, जनन क्षमता एवं स्वस्थ तथा बुद्धिमान संतान होंगी।

मेलापक फलित

स्वभाव

भ्पजमेी की राशि अग्नितत्व युक्त धनु तथा ौीप की राशि वायुतत्व युक्त कुम्भ राशि है। अग्नि एवं वायु में नैसर्गिक विषमता होने के कारण भ्पजमेी औरौीप का दाम्पत्य संबध सामान्य रहेगा तथा वैवाहिक जीवन की शुभता बनी रहेगी। अतः यह मिलान सामान्य रहेगा।

भ्पजमेी की जन्म राशि का स्वामी बृहस्पति तथा ौीप की राशि का स्वामी शनि परस्पर सम है। अतः इसके प्रभाव से इनके मध्य संबधों में प्रगाढ़ता रहेगी तथा एक दूसरे के प्रति प्रेम सहयोग एवं समर्पण का भाव रहेगा। साथ ही सुख दुख में एक दूसरे की सेवा तथा सहयोग करने में तत्पर रहेंगे। भ्पजमेी औरौीप एक दूसरे की गुणों की प्रशंसा तथा कमियों की उपेक्षा करेंगे इससे पारिवारिक शांति बनी रहेगी।

भ्पजमेी और ौीप की राशियां परस्पर तृतीय एवं एकादश भाव में पड़ती है। शास्त्रानुसार यह शुभ भकूट माना जाता है। अतः इसके प्रभाव से भ्पजमेी औरौीप का दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा एवं संबधों में भी मधुरता रहेगी। साथ ही एक दूसरे के अस्तित्व तथा स्वतंत्रता का सम्मान करेंगे तथा अनावश्यक रूप से एक दूसरे के कार्यो में हस्तक्षेप नहीं करेंगे जिससे पारिवारिक शांति बनी रहेगी तथा सुखद क्षणों का उपभोग करने में दोनों समर्थ रहेंगे। यदि भ्पजमेी औरौीप एक दूसरे के प्रति थोड़ी उदासीनता के भाव का त्याग करें तथा हार्दिक रूप से कार्य करें तो संबध एवं जीवन अत्यंत ही मधुर हो सकता है।

भ्पजमेी का वश्य चतुष्पद तथा ौीप का वश्य मानव है। चतुष्पद तथा मानव की परस्पर असमानता एवं नैसर्गिक शत्रुता होती है। अतः भ्पजमेी औरौीप की अभिरूचियों में अन्तर रहेगा। शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर भी विभिन्नता रहेगी फलतः तथा इनमे एक दूसरे को प्रसन्न तथा सनतुषट रखने मे असमर्थ होंगे जिससे संबंधों की मधुरता मे न्यूनता आएगी।

भ्पजमेी का वर्ण क्षत्रिय तथा ौीप का वर्ण शूद्र है। अतः भ्पजमेी की प्रवृति पराक्रमी तथा साहसिक कार्यो के प्रति रहेगी परन्तु ौीप किसी भी कार्य को परिश्रम तथा ईमानदारी से सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगी।

धन

भ्पजमेी औरौीप की तारा एक दूसरे के लिए सम रहेगी। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा सामान्य रूप से धन एवं लाभ अर्जित करने में दोनों समर्थ होंगे। भ्पजमेी औरौीप की राशि तृतीय एवं एकादश भाव में पड़ती है। यह शुभ भकूट माना जाता है। इसके प्रभाव से उनकी आय में नित्य वृद्धि होगी जिससे अर्थिक सुदृढ़ता बनी रहेगी। साथ ही मंगल का प्रभाव भी सम रहेगा। अतः धनार्जन होता रहेगा।

ीप एक सौभाग्यशाली महिला होंगी अतः उन्हें अचानक धन प्राप्ति की पूर्ण संभावना होगी। यह लाटरी या सट्टे या किसी अन्य माध्यम से हो सकता है। साथ ही पैतृक सम्पति या जायदाद भी उनको मिलेगी जिससे दम्पति धन एवं ऐश्वर्य से युक्त रहकर अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

स्वास्थ्य

भ्पजमेी की नाड़ी मध्य तथा ीप की नाड़ी आद्य है। अतः दोनों का जन्म अलग अलग नाड़ियों में होने के कारण यह मिलान उत्तम रहेगा। इसके शुभ प्रभाव से अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को यथा समय सम्पन्न करने में वे समर्थ होंगे जिससे दाम्पत्य जीवन की खुशहाली तथा सन्तुष्टि बनी रहेगी तथा समय भी सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा। साथ ही मंगल का भी किसी के स्वास्थ्य पर कोई दुष्प्रभाव नहीं है। अतः दोनों स्वस्थ तथा प्रसन्नचित रहकर अपना जीवन व्यतीत करने में सफल होंगे।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से भ्पजमेी और ीप का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त भ्पजमेी और ीप के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में ीप के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन ीप को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में ीप को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से भ्पजमेी और ीप सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार भ्पजमेी और ीप का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

ीप के अपनी ससुराल के लोगों से संबधों में वांछित मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा सास से कुछ मतभेद रहेगा जिससे उनके साथ सामंजस्य स्थापित करने में कठिनाई का सामना करना पड़ेगा तथापि यदि ीप धैर्य एवं बुद्धिमता से कार्य लें तो सास की सहानुभूति प्राप्त हो सकती है।

ससुर देवर एवं ननदों से ीप के संबध मधुर रहेंगे तथा उनसे वांछित स्नेह एवं

सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। ससुर की सुख सविधा एवं आराम का वह पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा वे भी उसकी सेवा भावना से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। देवर एवं ननद से भी ीप का व्यवहार मित्रता पूर्ण रहेगा तथा वे भी ीप से प्रसन्न रहेंगे। इस प्रकार वह ससुराल के लोगों से सामंजस्य स्थापित करके आनंदानुभूति प्राप्त करेंगी।

ससुराल-श्री

भ्पजमेी तथा उनकी सास के आपसी संबधों में विशेष मधुरता नहीं रहेगी तथा कई मामलों में उनके मध्य काफी प्रबल मतभेद समय समय पर दृष्टि गोचर होंगे। अतः यदि परस्पर सामंजस्य एवं बुद्धिमता के भाव का प्रदर्शन किया जाय तो इन मतभेदों में न्यूनता आएगी तथा आपसी संबधों में मधुरता के भाव की वृद्धि होगी जिससे स्नेह एवं सम्मान का भाव बना रहेगा।

लेकिन ससुर के साथ में भ्पजमेी के संबध अच्छे रहेंगे तथा वह उन्हें अपने पिता की तरह मान सम्मान तथा सेवा का भाव प्रदान करेंगे। साथ ही समयानुसार वह भ्पजमेी को अपनी ओर से बहुमूल्य तथा आवश्यक सलाह भी प्रदान करते रहेंगे एवं उन्हें अपने पुत्र के समान अपनत्व तथा स्नेह प्रदान करेंगे। साले एवं सालियों के साथ ही भ्पजमेी के संबध अच्छे रहेंगे तथा उनसे वांछित आदर सहयोग एवं सहानुभूति प्राप्त होती रहेगी। साथ ही उनसे सामंजस्य का भाव भी रहेगा। इस प्रकार ससुराल का दृष्टिकोण भ्पजमेी के प्रति अनुकूल ही रहेगा।